# ❋ 5 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

## ❋ ज्ञान-

1] भगवान को ढूँढते ही रहते हैं, परन्तु भगवान् कोई को मिलता नहीं। अभी भगवान् आया हुआ है, यह भी तुम बच्चे जानते हो, निश्चय भी है। ऐसे नहीं सबको पक्का निश्चय है। कोई न कोई समय माया भुला देती है, तब बाप कहते हैं आश्चर्यवत् मेरे को देखन्ती, मेरा बनन्ती, औरों को सुनावन्ती, अहो माया तुम कितनी जबरदस्त हो जो फिर भी भागन्ती कर देती हो। भागन्ती तो ढेर होते हैं। फारकती देवन्ती हो जाते हैं। फिर वह कहाँ जाकर जन्म लेंगे। बहुत हल्का जन्म पायेंगे। इम्तहान में नापास हो पड़ते हैं। यह है मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान। बाप ऐसे तो नहीं कहेंगे कि सब नारायण बनेंगे। नही, जो अच्छा पुरूषार्थ करेंगे, वे पद भी अच्छा पायेंगे।

2] बेहद के बाप से वर्सा कैसे मिलता है– यह कोई नहीं जानते। वर्सा मिलता ही है बाप से। और कोई भी ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि मनुष्य को दो बाप होते हैं। तुम सिद्ध कर बतलाते हो, हद के लौकिक बाप से हद का वर्सा, और पारलौकिक बेहद बाप से अर्थात् नई दुनिया का वर्सा मिलता है। नई दुनिया है स्वर्ग, सो तो जब बाप आये तब ही आकर देवे। वह बाप है ही नई सृष्टि का रचने वाला।

3] बाकी तुम सिर्फ कहेंगे भगवान् आया हुआ है– तो कभी मानेंगे नहीं, और ही टीका करेंगे। सुनेंगे ही नहीं। सतयुग में तो समझाना नहीं होता। समझाना तब पड़ता है, जब बाप आकर शिक्षा देते हैं। सुख में सिमरण कोई नहीं करते हैं, दु:ख में सब करते हैं। तो उस पारलौकिक बाप को ही कहा जाता है दु:खहर्ता सुख कर्ता। दु:ख से लिबरेट कर गाइड बन फिर ले जाते है अपने घर स्वीट होम। उनको कहेंगे स्वीट साइलेन्स होम। वहाँ हम कैसे जायेंगे– यह कोई भी नहीं जानते। न रचता, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। तुम जानते हो हमको बाबा निर्वाणधाम ले जाने के लिए आया हुआ है। सब आत्माओं को ले जायेंगे। एक को भी छोड़ेंगे नहीं। वह है आत्माओं का घर, यह है शरीर का घर।

4] बाप कहते हैं– बच्चे, तुमको यह वेद-शास्त्र आदि पढ़ने से कुछ भी प्राप्ति नहीं होत है। शास्त्र पढ़ते ही हैं भगवान् को पाने के लिए और भगवान् कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता हूँ। मुझे यहाँ बुलाते ही हैं कि आकर इस पतित दुनिया को पावन बनाओ।

5] पहले-पहले तुम शान्तिधाम में जाते हो, फिर सुखधाम में जाते हो। शान्तिधाम में तो है ही शान्ति। फिर सुखधाम में जाते हो, वहाँ अशान्ति की जरा भी बात नहीं। फिर नीचे उतरना होता है। मिनट बाई मिनट तुम्हारी उतराई होती है। नई दुनिया से पुरानी होती जाती है।

6] मिनट बाई मिनट टिक-टिक होती रहती है। सारा रील रिपीट होता, फिरता-फिरता फिर रोल होता जाता है फिर वही रिपीट होगा। यह ह्यूज़ रोल बड़ा वण्डरफुल है। इनका माप आदि नहीं कर सकते। सारी दुनिया का जो पार्ट चलता है, टिक-टिक होती रहती है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। यह चक्र फिरता ही रहता है। वह होता है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा।

# ✺ 5 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[ 2 ]

## ✺ योग-

1] तुम परमपिता को याद करते हो तो वर्सा मिलता है। बाप है ना। यह भी बच्चों को समझाया है सतयुग है सुखधाम। स्वर्ग को शान्तिधाम नहीं कहेंगे। शान्तिधाम जहाँ आत्मायें रहती हैं। यह बिल्कुल पक्का कर लो।

---

## ✺ धारणा-

1] कोई रोज़ आपकी ग्लानी करे, अकल्याण करे, गाले दे – तो भी उसके प्रति मन में घृणा भाव न आयें, अपकारी पर भी उपकार – यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। जैसे आप बच्चों ने बाप को ६३ जन्म गाली दी फिर भी बाप ने कल्याणकारी दृष्टि से देखा, तो फालो फादर। ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ ही है सर्व के प्रति कल्याण की भावना। अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो।

2] मनमनाभव की स्थिति में स्थित रहो तो औरों के मन के भावों को जान जायेंगे।

---

## ✺ सेवा-

1] किसी को सीधा नहीं कहना है कि भगवान् आया हुआ है, ऐसा कहेंगे तो लोग हँसी उड़ायेंगे, टीका करेंगे क्योंकि आजकल अपने को भगवान् कहलाने वाले बहुत हैं इसलिए तुम युक्ति से पहले दो बाप का परिचय दो। एक हद का, दूसरो बेहदा का बाप। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है, अब बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं, तो समझ जायेंगे।

*(अब उन्हों को कैसे समझायें कि भगवान् आया हुआ है, सीधा किसको कहेंगे भगवान् आया है, तो ऐसे कभी मानेंगे नहीं इसलिए समझाने की भी युक्ति चाहिए। ऐसे कभी किसी को कहना नहीं चाहिए कि भगवान् आया हुआ है। उनको समझाना है तुम्हारे दो बाप हैं। एक है पारलौकिक बेहद का बाप, दूसरा लौकिक हद का बाप। अच्छी रिति परिचय देना चाहिए, जो समझें कि यह ठीक कहते हैं।)*

2] तो पहले-पहले बाप का परिचय देता चाहिए। वह निराकार बाप है, उनको परमपिता भी कहा जाता है। परमपिता अक्षर राइट है और मीठा है।

3] पहले-पहले तो बाप का परिचय देना है, बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। उनका एक ही नाम है शिव। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब अति धर्म ग्लानि होती है, इसको कहा जाता है घोर कलियुग।

---